22-10-09 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे – सतगुरू की पहली-पहली श्रीमत है देही-अभिमानी बनो, देह-अभिमान छोड़ दो''

प्रश्नः- इस समय तुम बच्चे कोई भी इच्छा वा चाहना नहीं रख सकते हो – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि तुम सब वानप्रस्थी हो। तुम जानते हो इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश होना है। अब तुम्हें कुछ भी नहीं चाहिए, बिल्कुल बेगर बनना है। अगर ऐसी कोई ऊंची चीज़ पहनेंगे तो खींचेगी, फिर देह-अभिमान में फंसते रहेंगे। इसमें ही मेहनत है। जब मेहनत कर पूरे देही-अभिमानी बनो तब विश्व की बादशाही मिलेगी।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) इस बेहद नाटक में एक्ट करते हुए सारे नाटक को साक्षी होकर देखना है। इसमें मूँझना नहीं है। इस दुनिया की कोई भी चीज़ देखते हुए बुद्धि में याद न आये।

2) अपने आसुरी स्वभाव को बदल दैवी स्वभाव धारण करना है। एक-दो का मददगार होकर चलना है, किसी को तंग नहीं करना है।

वरदानः- दिल से ''मेरा बाबा'' कहकर सच्चा सौदा करने वाले सरेन्डर वा मरजीवा भव

ब्रह्माकुमार कुमारी बनना माना सरेन्डर होना। जब दिल से कहते हो ''मेरा बाबा'' तो बाबा भी कहते बच्चे सब कुछ तेरा। चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन जिसने दिल से कहा मेरा बाबा, तो बाप ने अपना बना लिया, यह दिल का सौदा है, मुख का स्थूल सौदा नहीं। सरेन्डर माना श्रीमत के अन्डर रहने वाले। ऐसे सरेन्डर होने वाले ही मरजीवा ब्राह्मण हैं।

स्लोगनः- अगर मेरा शब्द से प्यार है तो अनेक मेरे को एक मेरे बाबा में समा दो।